जीवन-चरित्र

यारी साहब के जीवन का हाल बहुत खोज करने पर भी कुछ नहीं मिलता सिवाय इस के कि वह जाति के मुसलमान थे और दिल्ली में अपने गुरू वीरू साहब की सेवा में रहते थे और उनके चोला छोड़ने पर उसी जगह बने रहकर अपना सतसग कराने लगे। दिल्ली में यारी साहब की समाध मौजूद है।

उन के इस संसार में रहने का समय दर्मियान विक्रमी सम्वत् १७२५ और १७८० के पाया जाता है।

यारी साहब के बुल्ला साहब गुरुमुख चेले हुए जो गुलाल साहब के गुरू और भीखा साहब के दादागुरू थे, जैसा कि आगे दी हुई वंशावली से जान पड़ता है। चार चेले उन के और प्रसिद्ध थे—केशवदास जी, सूफ़ी शाह, शेखन शाह और हस्त मुहम्मद शाह।

यारी साहब की बानी कहीं नहीं मिलती, जो शब्द हम छाप रहे हैं वह बड़ी खोज से थोड़ा २ करके दिल्ली, ग़ाज़ीपुर और बलिया के ज़िलों से मिले हैं। इन महात्मा की बड़ी ऊँची गति और प्रचंड भक्ति और शब्द मार्गी होना उनकी बानी के अंग अंग से झलकता है—सब पद अति कोमल, प्रेम रस में पगे और अंतरी भेद से भरे हुए हैं और जैसा कि उन के शब्दों के संग्रह का नाम "रत्नावली" है, सचमुच हर एक पद उसका एक अनमोल रत्न है।

यारी साहब के नाम से कोई पंथ नहीं चला जैसा कि उन्हीं के गुरु घराने में बहुत समय पीछे जगजीवन साहब और भीखा साहब और पलटू साहब के नाम से पंथ क़ायम हुए॥
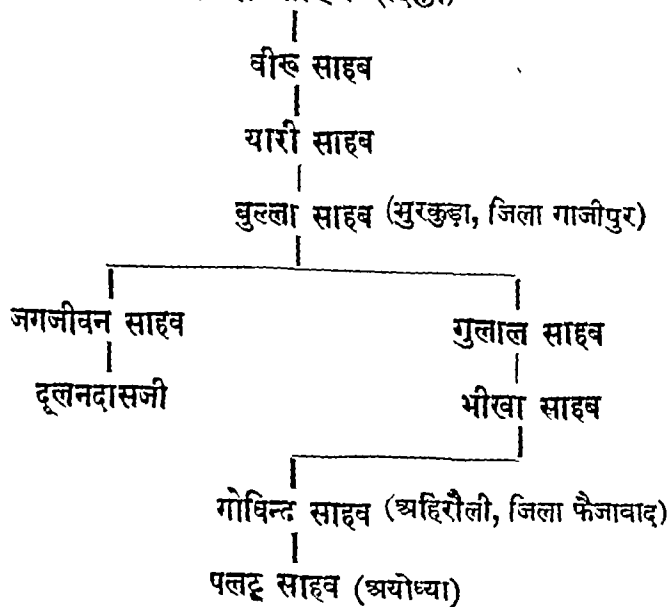
यारी साहब की रत्नावली

॥ शब्द १ ॥

बिरहिनी मंदिर दियना बार ॥ टेक ॥

बिन बाती बिन तेल जुगति सोँ, बिन दीपक उँजियार ॥ १ ॥
प्रान पिया मेरे गृह आयो, रचि पचि सेज सँवार ॥ २ ॥
सुखमन सेज परम तत रहिया, पिय निर्गुन निरकार ॥ ३ ॥
गावहु री मिलि आनँद मङ्गल, यारी मिलि के यार ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

हौँ[1] तो खेलौँ पिया सँग होरी ॥ १ ॥

दरस परस पतिबरता पिय की, छबि निरखत भइ बोरी ॥ २ ॥
सोरह कला सँपूरन देखौँ, रबि ससि भे [illegible] ठौरी ॥ ३ ॥
जब तेँ दृष्टि परो अबिनासी, लागो रूप ठगौरी ॥ ४ ॥
रसना रटत रहत निस बासर, नैन लगो यहि ठौरी[2] ॥ ५ ॥
कह यारी भक्ती करु हरि की, कोई कहे सो कहौ री ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३ ॥

दिन दिन प्रीति अधिक मोहिँ हरि की ॥ १ ॥
काम क्रोध जञ्जाल भसम भयो, बिरह अगिनि लगि धधकी ॥२॥
धुधुकि २ सुलगति अति निर्मल, झिलमिल झिलमिल झलकी।३।
झरि झरि परत अँगार अधर यारी, चढ़ि अकास आगे सरकी ।४।

॥ शब्द ४ ॥

रसना राम कहत तेँ थाको ॥ १ ॥

पानी कहे कहुँ प्यास बुझत है, प्यास बुझै जदि चाखो ॥ २ ॥
पुरुष नाम नारी ज्योँ जानै, जानि बूझि नहिँ भाखो ॥ ३ ॥
दृष्टी से मुष्टी नहिँ आवै, नाम निरंजन वा को ॥ ४ ॥
गुरु परताप साधु की सङ्गति, उलटि दृष्टि जब ताको ॥ ५ ॥
यारी कहै सुनो भाई संतो, बज्र बेधि कियो नाको[3] ॥ ६ ॥

---

(१) मैं। (२) जगह। (३) रास्ता।

॥ शब्द ५ ॥

हमारे एक अलह पिय प्यारा है ॥ १ ॥
घट घट नूर मुहम्मद साहब, जा का सकल पसारा है ॥ २ ॥
चौदह तबक जा की रुसनाई, झिलमिलि जोति सितारा है॥ ३ ॥
बेनमून बेचून अकेला, हिंदु तुरुक से न्यारा है ॥ ४ ॥
सोइ दरवेस दरस निज पायो, सोई मुसलम सारा है ॥ ५ ॥
आवै न जाय मरै नहिँ जीवै, यारी यार हमारा है ॥ ६ ॥

॥ शब्द ६ ॥

निरगुन चुनरी निर्बान, कोउ ओढ़ै संत सुजान ॥ १ ॥
षट दरसन में जाइ खोजो, और बीच हैरान ॥ २ ॥
जोति सरूप सुहागिनि चुनरी, आव बधू धरि ध्यान ॥ ३ ॥
हद बेहद के बाहरे यारी, संतन को उत्तम ज्ञान ॥ ४ ॥
कोऊ गुरु गम ओढ़ै चुनरिया, निरगुन चुनरी निरबान ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

हरि जन जीवता नहिँ मुआ ॥ टेक ॥
पाँच तीन पचीस पायक, बाँधि डारु कुआ ॥ १ ॥
अष्ट दल के कमल भीतर, बोलता इक सुआ ॥ २ ॥
तोरि पिंजर उड़न चाहत, प्रेम परगट हुआ ॥ ३ ॥
सीव के घर सक्ति आई, खेलता जम जुआ ॥ ४ ॥
काटि कसमल[१] चढ़ो भाठी, सेस ससि घर चुआ ॥ ५ ॥
गगन मद्धे सुरति लागी, सब्द अनहद हुआ ॥ ६ ॥
दास यारी तासु बलि बलि, देत सतगुरु दुआ[२] ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

झिलमिल झिलमिल बरखै नूरा, नूर जहूर सदा भरपूरा ॥१॥
रुनझुन रुनझुन अनहद बाजे, भँवर गुँजार गगन चढ़ि गाजे ।२।

(१) कलिमल। (२) बढ़ती मनाना।

रिमझिम रिमझिम बरखै मोती, भयो प्रकास निरंतर जोती ॥३॥
निरमल निरमल निरमल नामा, कह यारी तहँ लियो बिसामा ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

आरति करो मन आरति करो ॥ १ ॥
गुरु प्रताप साधु की संगति, आवा गवन तें छूटि पड़ो ॥२॥
अनहद ताल आदि सुध बानी, बिनु जिभ्या गुन बेद पढ़ो ॥३॥
आपा उलटि आतमा पूजो, त्रिकुटी न्हाइ सुमेर चढ़ो ॥४॥
सारँग सेत सुरति सों राखो, मन पतंग[1] होइ अजर जरो ॥५॥
ज्ञान कै दीप बरै बिनु बाती, कह यारी तहँ ध्यान धरो ॥६॥

॥ शब्द १० ॥

या बिधि भजन करो मन लाई ।
निर्मल नाम लखो बिनु लोचन[2], सेत फटिक रोसनाई[3] ॥१॥
सीप कि सुरति अकास बसत जस, चित चकोर चंदाई ।
कुंभक नीर[4] उलटि भरो जैसे, सागर बुंद समुंद समाई ॥२॥
जैसे मृग[5] की रीति परस्पर, लोह कंचन है जाई ।
मन गगरी पर बात सखिन सँग, कुंभ-कला नट लाई[6] ॥३॥
तत्त तिलक आपा मन मुद्रा, अजपा जाप तिर[7] पाई ।
भँवरगुफा ब्रह्मंड मेखला, जोग जुगति बनि आई ॥ ४ ॥
बाँबी उलटि सर्प को खाइ, ससि[8] में मीन नहाई ।
यारीदास सोई गुरु मेरा, जिन यह जुगति बताई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

जोगी जुगति जोग कमाव ॥ टेक ॥
सुखमना पर बैठि आसन, सहज ध्यान लगाव ॥ १ ॥
दृष्टि सम करि सुन्न सोवो, आपा मेटि उड़ाव ॥ २ ॥
प्रगट जोति अकार अनुभव, सब्द सोहं गाव ॥ ३ ॥

(१) पतंगा । (२) आँख । (३) जैसे फटिक मणि का उज्जल प्रकाश (४) घड़े में पानी । (५) हिरन नाद पर आशिक है । (६) जैसे सखियाँ पानी के घड़े पर घड़ा रख कर चलती हैं और नट घड़ों का खेल करता है यानी घड़े सिर पर रक्खे हुए रस्सी पर चलता है लेकिन इन दोनों की सुरत घड़े पर रहती है । (७) तीर, किनारा । (८) चन्द्रमा ।

छोड़ि मठ को चलहु जोगी, बिना पर उड़ि जाव ॥ ४ ॥
यारी कहै यह मत बिहंगम, अगम चढ़ि फल खाव ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

मन मेरा सदा खेले नट बाजी, चरन कमल चित राजी ॥टेक॥
बिनु करताल पखावज बाजै, अगम पंथ चढ़ि गाजी ।
रूप बिहीन सीस बिनु गावै, बिनु चरनन गति साजी ॥१॥
बाँस सुमेरु[1] सुरति कै डोरी, चित चेतन सँग चेला ।
पाँच पचीस तमासा देखहिँ, उलटि गगन चढ़ि खेला ॥ २॥
यारी नट ऐसी बिधि खेलै, अनहद ढोल बजावै ।
अनँत कला अवगति अनमूरति, बानक[2] बनि बनि आवै ॥३॥

॥ शब्द १३ ॥

मन ग्वालिया सत सुकृत तत दुहि लेह ॥ टेक ॥
नैन दोहनि[3] रूप भरि भरि, सुरति सब्द सनेह ॥ १ ॥
निझर झरत अकास ऊठत, अधर अधरहिँ देह ॥ २ ॥
जेहि दुहत सेस महेस ब्रह्मा, कामधेनु बिहेद[4] ॥ ४ ॥
यारी मथ के लयो माखन, गगन मगन भखेह[5] ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

चंद तिलक दिये सुन्दरि नारी । सोइ पतिबरता पियहिँ पियारी।१।
कंचन कलस धरे पनिहारी । सीस सुहाग भाग उँजियारी ॥२॥
सब्द सेँदुर दै साँग सँवारी । बेँदी अचल टरत नहिँ टारी ॥३॥
अपन रुप जब आपु निहारी । यारी तेज पुंज उँजियारी ॥४॥

॥ शब्द १५ ॥

मिथ्या जीवन मिथ्या है तन, या धन जो नहिँ परसन[6] ॥टेक॥
हम रे जाइब चलि कर, छटा जहाँ बंसी धुन ॥ १ ॥
त्रिकुटी तट तिलक सोधो, येही भजन ॥ २ ॥

---

(१) मेरुडंड । (२) बाना,भेष । (३) बरतन जिसमे दूध दुहा जाता है । (४) वह कामधेनु बिना देह की है । (५) भोजन किया ।(६) जो मालिक के भक्ति रूप धन को न परसा ।

साध बोला कमल खोला, अमृत बचन ॥ ३ ॥
निःचय करि ध्यान धरु, पावहु दरसन ॥ ४ ॥
यारी गावै सब्द सुनावै, सुनो साधु जन ॥ ५ ॥
सुन्न तें नित तारी लावो, सूझि है निर्गुन ॥ ६ ॥

॥ शब्द १६ ॥

तूं ब्रह्म चीन्हो रे ब्रह्मज्ञानी ॥ १ ॥
समुझि बिचारि देखु नीके करि, ज्यों दर्पन मधि अलख निसानी ।२।
कहै यारी सुनो ब्रह्मज्ञानी, जगमग जोति निसानी ॥ ३ ॥

॥ शब्द १७ ॥

उरधमुख भाठी, अवटौं कौनी भाँति ।
अर्ध उर्ध दोउ जोग लगायो, गगन मँडल भयो माठ[1] ॥ १ ॥
गुरु दियो ज्ञान ध्यान हम पायो, कर करनी कर ठाट ।
हरि के मद मतवाल रहत हैं, चलत उबट की बाट ॥ २ ॥
आपा उलटि के अमी चुवाओ, तिरबेनी के घाट ।
प्रेम पियाला सुति भरि पीवो, देखो उलटी बाट ॥ ३ ॥
पाँच तत्त एक जोति समानो, धर छःवो मन हाथ ।
कह यारी सुनियो भाइ संतो, छकि छकि रहि भयो मात[3] ॥४॥

॥ शब्द १८ ॥

राम रमझनी[1] यारी जीव के ॥ टेक ॥
घट में प्रान अपान दुबाई[4] । अरध उरध आवै अरु जाई ॥१॥
लेके प्रान अपान मिलावै । वाही पवन तें गगन गरजावै ॥२॥
गरजै गगन जो दामिनि दमकै । मुकूताहल रिमझिम तहँ वरखै ३
वा मुक्ता महँ सुरति परोवे । सुरति सब्द मिल मानिक होवे ४
मानिक जोति बहुत उँजियारा । कह यारी सोइ सिरजनहारा ५
साहब सिरजनहार गुसाँईं । जा में हम सोई हम माहीं ॥६॥

(१) बरतन । (२) मतवाला । (३) रमझनी करना गंवारी भाषा में रात दिन किसी बात की चरचा करने को कहते है । (४) दो वायु ।

जैसे कुंभ नीर बिच भरिया। बाहर भीतर खालिक[1] दरिया ॥७॥
उठ तरंग तहँ मानिक मोती। कोटिन चंद सूर के जोती ॥८॥
एक किरिन का सकल पसारा। अगम पुरुष सब कीन्ह नियारा॥९॥
उलटि किरिन जब सूर समानी। तब आपनि गति आपुँहि जानी ॥१०॥
कह यारी कोइ अवर न दूजा। आपुहिँ ठाकुर आपुहिँ पूजा ।११।
पूजा सत्तपुरुष का कीजै। आपा मेटि चरन चित दीजै ॥१२॥
उनमुनि रहनि सकल को त्यागी। नवधा प्रीति बिरह बैरागी॥१३॥
बिनु बैराग भेद नहिं पावै। केतो पढ़ि पढ़ि रचि रचि गावै ॥१४॥
जो गावै ता को अरथ बिचारै। आपु तरै औरन को तारे ॥१५॥

॥ दोहा ॥

तारनहार समर्थ है, और न दूजा कोय।
कह यारी सतगुरु मिलैं, अचल अमर तब होय ॥१६॥

॥ शब्द १९ ॥

सतगुरु है सतपुरुष अकेला। पिंड ब्रह्मंड के बाहर मेला ॥१॥
दूर तेँ दूर ऊँच तेँ ऊँचा। बाट न घाट गली नहिँ कूचा ॥२॥
आदि न अंत मध्य नहिं तीरा। अगम अपार अति गहिर गँभीरा।३।
कच्छ[2] दृष्टि तहँ ध्यान लगावै। पल महँ कीट भृंग होइ जावै ।४।
जैसे चकोर चंद के पासा। दीसै धरती बसै अकासा ॥५॥
कह यारी ऐसे मन लावै। तब चातृक स्वाँती जल पावै ॥६॥

॥ शब्द २० ॥

सुन्न के मुकाम में बेचून[3] की निसानी है ॥१॥
जिकिर[4] रूह सोई अनहद बानी है ॥२॥
अगम को गम्म नाहीं झलक पिसानी[5] है ॥३॥
कहै यारी आपा चीन्हे सोई ब्रह्मज्ञानी है ॥४॥

॥ शब्द २१ ॥

उड़ु उड़ु रे बिहंगम चढ़ु अकास ॥१॥

---

(१) पैदा करने वाला। (२) कछुआ जो सुरत से अपने अंडे को सेता है। (३) मालिक (४) सुमिरन। (५) पेशानी, माथा।

जहँ नहिँ चाँद सूर निस बासर, सदा अमरपुर अगम बास ॥२॥
देखै उरध अगाध निरंतर, हरष सोक नहिँ जम कै त्रास ॥३॥
कह यारी उहँ बधिक फाँस नहिँ, फल पायो जगमग परकास ॥४॥

अलिफ़नामा

(ककहरा फ़ारसी का)

(१)

॥ दोहा ॥

ओंकार के पार भजु, तजि अभिमान कलेस ।
तीसो अच्छर प्रेम के, येही बड़ उपदेस ॥ १ ॥
अलिफ़–एक अबिनासी देव । अविगत अपरम्पारहिँ भेव ।
ताहि धरो धरि ध्यान हजूर । सो सब ठौर रहा भर पूर ॥२॥
बे–बिन जिभ्या सुमिरन करै । उनमुनि सोँ मन की धुनि धरै ।
पूरन ब्रह्म जहाँ तहँ आप । ताहि जाप को कीजै जाप ॥३॥
ते–तत्त सोधि कै लीजै । मथन करत सोच नहिँ कीजै ।
सुरति निरति जो राखै कोई । तौ लव लगै परंगत[१] होई ॥४॥
से–साबित दिल खोजै देँह । बोलनहार जगत गुरु जेह ।
घट घट बोलै रमता राम । नाद बरन नारायन नाम ॥५॥
जीम–जुगति बिनु जोग न होई । वा तन प्रेम न उपजै कोई ।
नाद बरन जो लावे ध्यान । सो जोगी जुग जुग परमान ॥६॥
हे–हद मेँ क्योँ करो रेल । बेहद में मुक्ता है खेल ।
सुन्न सहज मेँ रहै समाय । ता का आवागवन नसाय ॥७॥
खे–खाविँद को जो कोई ध्यावै । अरध उरध बिच तारी लावै ।
साँस उसाँस से सुमिरन मंडे । करम कटै चौरासी खंडे ॥८॥
दाल–दसो दिसि खोजै ताही । मूल द्वार बाँधै चित जाही ।
ब्रह्म अगिन तबहीँ उपजाई । तीन लोक सुमिरो रे भाई ॥९॥
ज़ाल–ज़ौक़[२] पाँचो का भानु[३] । बाहर जाते भीतर आनु[४] ।

(१) परम गति को प्राप्त हो । (२) मजा । (३) तोड़ दो, नष्ट करो । (४) लावो ।

मेलि दसो दिसि इक मन करै । सो साधू कहु कैसे मरै ॥१०॥
रे–रावन ह्वै पूरै आसन । बैठै प्रेम तत्त सिंहासन ।
त्रिकुटी लोक मेल करि जोरै । सहजहिं लंका गढ़ तब तोरै ॥११॥
ज़े–ज़ोर सोँ सीध चलावै । गंग जमुन सरसुती[1] मिलावै ।
तिरबेनी मन में असनान । हरि जल भीँ जहिँ संत सुजान ॥१२॥
सीन–सुखमन केरी नौबत बाजै । अनहद घोर गगन में गाजे ।
घर बरसावै अम्मर भरै । ता की सेवा गोरख करै ॥१३॥
शीन–शोर का नाहीं काम । इंगल पिंगल बोलहिँ राम ।
तारी लागा दसवें द्वार । तत्त निरंजन ओअंकार ॥ १४ ॥
साद–सबूर सिदक़[2] जो होई । अजरा जरै सो अमरा होई ।
नौ नाड़ी का जानै भेव । तौ ता को बंदै[3] सुकदेव ॥ १५ ॥
ज़ाद–ज़रूरत सुखमन जोई । चाँद सूर बिच भाठी होई ।
पीवै अमृत मन परचंड । खेलै एक एक ब्रह्मंड ॥ १६ ॥
तो–तौर औरै खेलै ख्याल । नाथै नाग पैठि पाताल ।
बामी उलटि सर्प को खाय । मंत्री दीसै[4] सहज समाय ॥ १७ ॥
ज़ो–ज़ालिम कुछ पूछै मन । बंकनाल को राखै सम ।
फूटै चक्र मिटै सब छोती[5] । चौमुख दीसै जगमग जोती ॥१८॥
ऐन–इनायत[6] हरि की बढ़ै । चंद उतारै सूरज चढ़ै[7] ।
बिगसै कँवल भँवर महँ जाई । महकै बास गगन को धाई । १६
ग़ैन–ग़ुस्सा तजि कै धारै ध्यान । पच्छिम दिसा जो उगवै भान ।
भँवर गुफा में रहै समाय । होय अमर फिर काल न खाय ॥२०॥
फ़े–फ़हम [8]आनि कुमति को पेल । आपा मेटि अलख होइ खेल ।
दुमती मरन एक करि जान । सतगुरु योँ दैं पद निर्बान ॥२१॥
क़ाफ़–क़रार[9] सहो है मेरा । सतगुरु साहब बंदा तेरा ।

---

(१) इँगला, पिंगला और सुषमना नड़ियाँ । (२) सचाई । (३) उसकी सुकदेव मनि वंदना करै । (४) मंत्र जानने वाला देखै ।(५) छूत ।(६) देया । (७) बाँयाँ स्वाँसा उतारै और दायाँ स्वाँसा वैचढ़ा । (८) सुमति । (९) प्रतिज्ञा ।

दे उपदेस मिलावहिँ राम। हौँ बलिहारी गुरु के नाम ॥२२॥
काफ़–कुमारग कूप कुआला[1] तृस्ना मोह भरम जंजाला।
ये आपुहिँ सोँ तजु रे प्रानी। सतगुरु बोलहिँ अमृत बानी।२३।
लाम–लोभ लालच चतुराई। इन के छोड़े होय भलाई।
जिभ्या अवर लँगोटी राखी[2]। सब साधुन मिलि बोलहिँ साखी२४
मीम–महादेव और सुकदेव। तीनों लोक कै जानहिँ भेव।
जो इन के मारग पहँ चलै। त्रिभुवन सूझै अबिरति[3] मिलै ॥२५॥
नूँ–नूतन[4] हेरो हरि की काया। ना तो जनम अकारथ जाया।
रामहिँ सुमिरो तजो बिकारा। भजि भगवंत उतरु भव पारा २६
वाव–वही है अवर न दूजा। आपुहिँ ठाकुर आपुहिँ पूजा।
आपुहिँ आपु और नहिँ आनी[5]। ऐसा साधू है ब्रह्मज्ञानी २७
हे–हाँसी जनि जानहु येह। आतम आपुहिँ देखहु देँह।
घट घट मेँ आपुहिँ रमि रहा। गुरु जेहि होइ सोई पद लहा।२८
नाम लाय चित खेलहु खेला। आपुहिँ गुरू आपुहीँ चेला।
आपुहिँ आवै आपुहिँ जाय। और कहा मोहिँ देहु बताय।२९।
लाम अलिफ़–एक तेँ हुआ अनेक। आदि अंत फिरि एकहि एक।
उनमुनि मेँ ममता मन त्यागी। आपा मेटि चरन मेँ लागी॥३०॥
हमज़ा–हम[6] जाइ हरि सुमिरन करै। बिनु परियास[7] भवसागर तरै।
एक पलक नहिँ दूसरि आसा। करम करै चौरासी नासा ॥३१॥
ये–यारी हरिजी सोँ कीजै। निस दिन प्रेम भक्ति करि लीजै।
हरि हरि करते आपा खोवै। तब हरि मेँ हरि आपुहि होवै।३२।

(२)

अलिफ़–एक हरि नाम विचार।
बे–भजु विस्व-तारन संसार ॥ १ ॥

---

(१) कुवाँ। (२) जिभ्या इंद्री और काम इंद्री को बस में रक्खै। (३) वृत्ति से रहित अवस्था। (४) सुन्दर। (५) दूसरा। (६) हँगता। (७) मिहनत।

(३)

आँधरे को हाथी हरि हाथ जा को जैसो आयो,
बूझो जिन जैसो तिन तैसोई बतायो है ॥
टकाटोरी दिन रैन हिये हूँ के फूटे नैन,
आँधरे की आरसी में कहा दरसायो है ॥
मूल की खबरि नाहिँ जा सोँ यह भयो मुलुक,
वा को बिसारि भोंदू डारे[१] अरुझायो है ।
आपनो सरूप रूप आपु माहिँ देखै नाहिँ,
कहै यारी आँधरे ने हाथी कैसो पायो है ॥

(४)

गावे गगन तान सुनियत बिना कान,
बिना नैन देखियत अलख मकान है ।
सुरति चढ़ी कमान छेदि गयो आसमान,
लामकान[२] का मकान उदै भयो भान है ॥
कहै यारी सुजान मेरो कहो लीजै मान,
सोई सूर ज्ञानी जा के हिरदे सदा ध्यान है ॥

(५)

आँखि कान नाक मुँह मूँदि के निहार देखु,
सुन्न में जोति याही परगट गुरु ज्ञान है ।
त्रिकुटी में चित्त देई ध्यान धरि देखु तहाँ,
दामिनि दमकै चाचरी मुद्रा को अस्थान है ॥
भूचरी मुद्रा सोहाग जागै मस्तक,
भाग पायो सकल निरंतर की खान है ॥
गगन गुफा में पैठि अधर आसन बैठि,
खेचरी मुद्रा अकास फूलै निर्वान है ॥

---

(१) शाखा । (२) त्रिकुटी जो सूरज ब्रह्म का स्थान है ।

(६)

गयो सो गयो बहुरि नहिँ आयो,
दूरि तेँ अंतर गवन कियो तिहुँ लोक दिखायो ।
तेहू तेँ आगे दूरि तेँ दूरि, परे तेँ परे जाइ छायो ॥
यारी कहैं अति पूरन तेज, सो देखि सरूप पतंग समायो ।
आवै न जाय मरै नहिँ जीवै, हलै न टलै तहवाँ ठहरायो ॥

(७)

एक कहो सो अनेक ह्वै दीसत, एक अनेक धरे हैं सरीरा ।
आदिहि तौ फिर अंतहु भी, मद्ध सोई हरि गहिर गँभीरा ॥
गोप कहो सो अगोप सोँ देखो, जोति सरूप बिचारत हीरा ।
कहे सुने बिनु कोइ न पावै, सो कहि के सुनावत यारी फकीरा ॥

(८)

देखु बिचारि हिये अपने नर, देँह धरो तौ कहा बिगरो है ।
यह मट्टी को खेल खिलौना बनो, एक भाजन[2] नाम अनंत धरो है ॥
नेक प्रतीत हिये नहिँ आवत, भर्म भुलो नर अवर करो है ।
भूषन ताहि गँवाइ के देखु, यारी कंचन औन को औन[3] धरो है ॥

(९)

गहने के गढ़े तेँ कहीँ सोनो भी जातु है,
सोनो बीच गहनो और गहनो बीच सोन है ॥
भीतर भी सोनो और बाहर भी सोन दीसै,
सोनो तो अचल अंत गहनो को मीच[4] है ॥
सोन को तो जानि लीजै गहनो बरबाद कीजै,
यारी एक सोनो ता मेँ ऊँच कवन नीच है ॥

—:o:—

॥ झूलना ॥

(१)

विन वंदगी इस आलम[5] में, खाना तुझे हराम है रे ।
वंदा करै सोइ वंदगी, खिदमत में आठो जाम है रे ॥

(१) गुप्त । (२) बरतन । (३) ठीक का ठीक —*

यारी मौला बिसारि के, तू क्या लागा बेकाम है रे।
कुछ जीते बंदगी कर ले, आखिर को गोर[1] मुकाम है रे॥

(२)

आँखी सेती जो देखिये, सो तो आलम फ़ानी[2] है।
कानोँ सेती जो सुनिये रे, सो तो जैसे कहाना है॥
इस बोलते को उलटि देखै, सोइ आरिफ़[3] सोइ ज्ञानी है।
यारी कहै यह बूझि देखा, और सबै नादानी है॥

(३)

दोउ मूँदि के नैन अंदर देखा, नहिँ चाँद सुरज दिन राति है रे।
रोसन समा[4] बिनु तेल बाती, उस जोति सोँ सबै सिफाति[5] है रे॥
गोता मारि देखो आदम, कोउ अवर नाहिँ सँग साथि है रे।
यारी कहै तहकीक किया, तू मलकुलमौत[6] की जाति है रे॥

(४)

आँखिन चितै के पग बंधा, और साधा गगन को है रे।
उत्तर दिसा गवन कीया, फिर जाय देखा उस बन को रे॥
सागर बीच में बुंद को लाय, उलटि मारा उस मन को रे।
यारी कहै अकल[7] कला, बिन नैन देखा दरसन को रे॥

(५)

धरती मिली आकास को रे, ऊँचे महल में बास पाया।
समुंद में केल कियो मछरी, पहार उपर जाय घर छाया॥
फूल सेती कली भई, मिलि चाँद सुरज दोउ घर आया।
यारी कहै देखो जीभ बिना, अनहद के तान गगन गाया॥

(६)

सूली के पार मेहर पेखा, मलकूत जबरूत लाहूत तीनो[9]।
लाहूत आगे तीन सुन्न है रे, हाहूत के रस में रंग भीनो[9]॥

---

(१) कब्र। (२) नाश होने वाला। (३ पहिचानने वाला, महात्मा। (४) आसमान। (५) गुन (६) मौत या काल का फरिश्ता या दूत। (७) जिस काम या खेल का कोई न कर सके। (८) सूरज। (९) मलकूत=देवलोक, जबरूत=सहसदल कँवल, लाहूत=त्रिकुटी, हाहूत=सुन्न या संतों का दसवाँ द्वार।

धुवाँ होइ के ऊपर चढ़ो, मुतलक मोती का नूर चूनो ।
आँखिन चितै कै बैठ यारी, माते माते माते बूनो[१] ॥

(७)

गुरु के चरन की रज लै के, दोउ नैन के बीच अंजन दीया ।
तिमिर मेटि उजियार हुआ, निरंकार पिया को देखि लिया ॥
कोटि सुरज तहँ छपे घने, तीनि लोक धनी धन पाइ पिया ।
सतगुरु ने जो करी किरपा, मरि के यारी जुग जुग जीया ॥

(८)

जहँ रूप न रेख न रंग है रे, बिन रूप सिफात[२] में आप फूला ।
फूल बिना जहँ बास है रे, निर्बास के बास भँवर भूला ॥
उहाँ दह[३] बिना कँवल है रे, कँवल की जोति अलख तोला ।
यारी अलम[४] मलोल[५] नहीं, जहँ फूल देखा बिन डार मूला ॥

(९)

जहँ मूल न डारि न पात है रे, बिन सींचे बाग सहज फूला ।
बिन डाँड़ी का फूल है रे, निर्बास के बास भँवर भूला ॥
दरियाव के पार हिंडोलना रे, कोउ बिरही बिरला जा झूला ।
यारी कहै इस झूलने में, झूले कोऊ आसिक दोला[६] ॥

(१०)

जब लग खोजे चला जावै, तब लग मुद्दा[७] नहिं हाथ आवै ।
जब खोज मरै तब घर करै, फिर खोज पकर के बैठ जावै ॥
आप में आप को आप देखै, और कहूँ नहिं चित्त जावै ।
यारी मुद्दा हासिल हुआ, आगे को चलना क्या भावै ॥

(११)

जमीं बरसै असमान भीजै, बिन बातिहिं तेल जलाइये जी ।
उहाँ नूर तजल्ली[८] बीच है रे, बेरंगी रंग दिखाइये जी ॥
फूल बिना जदि फल होवै, तदि हीर[९] की लज्जत पाइये जी ।

---

(१) मात यानी मस्त हो कर मोतियों को गुथो । (२) गुन । (३) जहाँ गहिरा पानी हो । (४) दुख । (५) फिक्र । (६) झूला (७) मुद्दआ अर्थात सार वस्तु । (८) प्रकाश । (९) गूदा ।

यारी कहै यहि कौन बूझै, यह का सोँ बात जनाइये जी ॥

(१२)

अंधा पूछै आफताब[1] को रे, उसे किस मिसाल बतलाइये जी ।
वा नूर समान नहीं औरै, कवने तमसील[2] सुनाइये जी ॥
सब अँधरे मिलि दलील करैं, बिन दीदा दीदार न पाइये जी ।
यारी अंदर यकीन बिना, इलिम से क्या बतलाइये जी ॥

(१३)

चाँद बिना जहँ चाँदनी रे, दीपक बिना जगमग जोती ।
गगन बिना दामिनि देखो, सीप बिना सागर मोती ॥
दह[3] बिना कँवल है रे, अच्छर है बिन कागद सेती ।
अनगउवा[4] का दूध यारी बद[5], बाँझ के पूत कै जाति गोती ॥

(१४)

गगन गुफा में बैठि के रे, अजपा जपै बिन जीभि सेती ।
त्रिकुटी संगम जोति है रे, तहँ देख लेवै गुरु ज्ञान सेती ॥
सुन्न गुफा में ध्यान धरै, अनहद सुनै बिन कान सेती ।
यारी कहै सो साध है रे, बिचार लेवै गुरु ज्ञान सेती ॥

(१५)

गगन गुफा में बैठि के रे, उलटि के अपना आप देखै ।
अजपा जपै बिन जीभि सोँ रे, बिन नैन निरंजन रूप लेखै ॥
जोति बिना दीपक है रे, दीपक बिना जगमग पेखै ।
यारी अलख अलेख है रे, भेष के भीतर भेष भेषै ॥

(१६)

हम तो एक हुबाब[6] हैं रे, साकिन[7] बहर[8] के बीच सदा ।
दरियाव के बीच दरियाव कै मौज है, बाहर नाहीं ग़ैर ख़ुदा ॥
उठने में हुबाब है देखो, मिटने में मुतलक़ सौदा[9] ।
हुबाब तो ऐन दरियाव यारी, वोहि नाम धरो है बुदबुदा ॥

---

(१) सूरज । (२) मिसाल, दृष्टांत । (३) जहाँ गहिरा पानी हो । (४) बिना गऊ । (५) बदता यानी ठहराता है । (६) पानी का बुल्ला । (७) रहने वाले (८) समुद्र । (९) बावलापन ।

(१७)

आब के बीच निमक जैसे, सब लोहै येहि मिलि जावै।
यह भेद की बात अवर है रे, यह बात मेरे नहिँ मन भावै ॥
गवास[1] होइ के अंदर धसई, आदर सँवार के जोति लावै।
यारी मुद्दा हासिल हूआ, आगे को चलना क्या भावै ॥

॥ साखी ॥

जोति सरूपी आतमा, घट घट रहो समाय।
परम तत्त मन भावनो, नेक न इत उत जाय ॥१॥
रूप रेख बरनौँ कहा, कोटि सूर परगास।
अगम अगोचर रूप है, [कोउ] पावै हरि को दास ॥२॥
नैनन आगे देखिये, तेज पुंज जगदीस।
बाहर भीतर रमि रह्यो, सो धरि राखो सीस ॥३॥
बाजत अनहद बाँसुरी, तिरबेनी के तीर।
राग छतीसो होइ रहे, गरजत गगन गँभीर ॥४॥
आठ पहर निरखत रहो, सन्मुख सदा हजूर।
कह यारी घरहीँ मिलै, काहे जाते दूर ॥५॥
बेला फूलां गगन मेँ, बंकनाल गहि मूल।
नहिँ उपजै नहिँ बीनसै, सदा फूल के फूल ॥६॥
दछिन दिसा मोर नइहरो, उत्तर पंथ ससुराल।
मानसरोवर ताल है, [तहँ] कामिनि करत सिँगार ॥७॥
आतम नारि सुहागिनी, सुंदर आपु सँवारि।
पिय मिलबे को उठि चली, चौमुख दियना बारि ॥८॥
धरति अकास के बाहरे, यारी पिय दीदार।
सेत छत्र तहँ जगमगै, सेत फटिक उँजियार ॥९॥
तारनहार समर्थ है, अवर न दूजा कोय।
कह यारी सतगुरु मिले, [तौ] अचल अरु अम्मर होय ॥१०॥

॥ इति ॥

---

(१) गौवास=ग़ोता लगाने वाला।

आवश्यक सूचना

संतबानी पुस्तकमाला के उन महात्माओं की लिस्ट जिनकी जीवनी तथा बानियाँ छप चुकी हैं—

कबीर साहिब का अनुराग सागर
कबीर साहिब का बीजक
कबीर साहिब का साखी-संग्रह
कबीर साहिब की शब्दावली—चार भागों में
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदडी, रेखते, झूलने
कबीर साहिब की अखरावती
धनी धरमदास की शब्दावली
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) भाग १ 'शब्द'
तुलसी शब्दावली और पद्मसागर भाग २
तुलसी साहिब का रत्नसागर
तुलसी साहिब का घट रामायण—२ भागों में
दादू दयाल भाग १ 'साखी',—भाग २ "पद"
सुन्दरदास का सुन्दर बिलास
पलटू साहिब भाग १ कुंडलियाँ। भाग २ रेखते, झूलने, सवैया, अरिल, कवित्त। भाग ३ भजन और साखियाँ।
जगजीवन साहब—२ भागों में
दूलनदास जी की बानी
चरनदास जी की बानी, दो भागों में
गरीबदास जी की बानी
रैदास जी की बानी
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी
दरिया साहिब (मारवाड वाले) की बानी
भीखा साहिब की शब्दावली
गुलाल साहिब की बानी
बाबा मलूकदास जी की बानी
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी
यारी साहिब की रत्नावली
बुल्ला साहिब का शब्दसार
केशवदास जी की अमीघूँट
धरनीदास जी की बानी
मीराबाई की शब्दावली
सहजोबाई का सहज-प्रकाश
दयाबाई की बानी
संतबानी संग्रह, भाग १ 'साखी',—भाग [२] 'शब्द'
अहिल्या बाई (अंग्रेजी पद में)

अन्य महात्मा जिनकी जीवनी तथा बानियाँ नहीं मिल सकीं

१ पीपा जी। २ नामदेव जी। ३ सदना जी। ४ सूरदास जी। ५ स्वामी हरिदास जी। ६ नरसी मेहता। ७ नाभा जी। ८ काष्ठजिह्वा स्वामी।

प्रेमी और रसिक जनों से प्रार्थना है कि यदि ऊपर लिखे महात्माओं की अ[सल] जीवनी तथा उत्तम और मनोहर साखियाँ या पद जो सतबानी पुस्तकमाला के [किसी] ग्रन्थ में नहीं छपे हैं मिल सकें तो कृपा पूर्वक नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें [उनके] कष्ट के लिए उनको हार्दिक धन्यवाद दिया जायगा। यदि पाठक महोदय ऊपर [लिखे] महात्माओं का असली चित्र भी प्राप्त कर सकें, तो उनसे प्रार्थना है कि नीचे लिखे [पते से] पत्र-व्यवहार करें। चित्र प्राप्ति के लिए उचित मूल्य या खर्च दिया जायगा।

मैनेजर—संतबानी पुस्तकमाला, बेलविडियर प्रेस, प्रयाग